" *प्रतिनिधिक हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श : एक अध्ययन*"

सार - संक्षेप

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय नांदेड़ के मानवीय विद्या संकाय अंतर्गत पी एच .डी (हिंदी)उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध -प्रबंध का सार -संक्षेप

: शोध छात्रा :

सुनीता कोंडीबा मडके

(एम. ए ,बी. एड, सेट, नेट)

: शोध निर्देशक :

डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी सर

(हिंदी विभाग अध्यक्ष)

दयानंद कला महाविद्यालय लातूर

त. लातूर , जि. लातूर

अगस्त - 2023

" प्रतिनिधिक हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श : एक अध्ययन"

प्रस्तावना :-

मनुष्य की जिज्ञासु वृत्ति भी शोध कार्य की जननी होती है। किसी विषय को गहराई से जानने की तीव्र इच्छा ही शोध कार्य का स्वरूप ग्रहण करती है। मेरे जीवन में भी कुछ ऐसा ही हुआ ।मुझे अपने बचपन से ही साहित्य पढ़ने में रुचि रही है इसी के फल स्वरुप मैंने अपनी उच्च शिक्षा के अंतर्गत स्नातकोत्तर उपाधि में हिंदी भाषा विषय को मुख्य विषय के रूप में चुना । इसी बीच मैंने अनेक हिंदी साहित्यकारों का अध्ययन किया तथा उनके द्वारा रचित रचनाएं पढ़ी ।जिस वजह से मुझमें हिंदी में शोध कार्य करने हेतु रुचि उत्पन्न हो गई ।

मैंने हिंदी के अंतर्गत ही किसी विषय को लेकर शोध कार्य करने का निर्धारण किया ।अभी मेरे समक्ष प्रश्न था कि अनुसंधान के लिए हिंदी विषय के अंतर्गत कौन सा शोध विषय लिया जाए? जिस पर मैं ईमानदारी से शोध कार्य या अनुसंधान कार्य कर सकूं। इसी वजह से मैंने हिंदी साहित्य का गहन अध्ययन करना शुरू किया।

हिंदी साहित्य का अध्ययन करते समय इसके युगों का अगर अवलोकन किया जाएं तो हम देख सकते हैं कि प्रत्येक युग में विभिन्न विषयों पर रचनाकारों द्वारा लेखन कार्य हुआ है। विशेष कर आधुनिक युग का संदर्भ लिया जाए तो इस युग की खास बात यह रही है कि इसमें मनुष्य की स्थिति,

भावनाओं, क्रियाकलाप आदि को केंद्र में रखकर साहित्य सृजन किया गया। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद युग के पश्चात यथार्थवाद को अपनाया गया जिस वजह से इस युग में एक नया मोड़ आया जिसमें मानवी जीवन के विभिन्न अंगों पर विचार प्रस्तुत होने लगे।

समाज में चित्रित मनुष्य की भावना ,क्रिया, दशा तथा उसकी स्थिति पर भी लिखा गया। जिसकी प्रतिक्रिया में आगे चलकर अलग-अलग विमर्श पर भी साहित्यकारों द्वारा प्रचुर मात्रा में लेखन कार्य हुआ। जैसे - स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श ,आदिवासी विमर्श तथा किन्नर विमर्श आदि। इस प्रकार का साहित्य मनुष्य जीवन पर लिखा महत्वपूर्ण साहित्य का हिस्सा रहा।

भारतीय समाज की संरचना को मूलतः दो वर्गो में बाटा गया हैं एक स्त्री और एक पुरुष। यह विभाजन लिंग के आधार पर होने के कारण जन्म से ही निर्धारित होता है किंतू इस वर्ग के साथ एक तिसरा वर्ग भी समाज में महत्वपुर्ण रहा हैं जिसे समाज तृतीय पंथी के रूप में पहचानता है। हम जिन्हे किन्नर, हिजडा, थर्ड जेंडर, आदी विभिन्न नामो से पुकारते हैं। प्राचीन काल में देखे तो महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथो में भी किन्नरों के सामाजिक उपस्थिती प्रमाण मिलते है। किंतु कितनी विडंबना की बात है कि इसके बावजूद भी तृतीय पंथी को समाज में उचित स्थान नही मिल पाया। समाज उन्हे अपनाने को लेकर तब से अभी तक उदासीन रहा हैं। समाज के द्वारा प्रताडित तथा बहिष्कृत इस समाज को उचित

न्याय दिलाने तथा उनके हक के लिये साहित्य जगत में साहित्यकारो ने समय समय पर अपना योगदान दिया है।

प्रत्येक युग में उन वंचित और हाशिए पर रखे समाज पर साहित्य लिखा गया। उन विमर्शों में से एक वर्ग जो किन्नर रूप में पहचाना जाता है, उन पर साहित्यकारों का पहले तो ध्यान नहीं गया किंतु 21वीं सदी तक आते-आते अनेक रचनाकारों के द्वारा इस समाज पर भी रचनाएं लिखी जाने लगी | किंतू आज भी हिन्दी साहित्य मैं किन्नर विमर्श अपरिपक्व अवस्था मैं हैं फिर भी साहित्य जगत मैं किन्नरो के हक के लिये किये प्रयासो की सराहना करनी चाहिए।

आज भी कोई किन्नर को देखे तो उपेक्षित भाव से मुह मोड लेते हैं।

विषय चयन की प्रेरणा :-

प्राचीन काल से आज तक स्त्री , दलित,आदिवासी, अल्पसंख्यक,तथा किन्नर आदि सभी पात्र हमेशा ही उपेक्षा तथा बहिष्कार के पात्र रहे हैं | मैं एक स्त्री हूं ,तथा उपेक्षा, बहिष्कार, अपमान आदि का सामना एक किन्नर को किस प्रकार करना पड़ता है इसे मैं भली-भांति समझ सकती हूं |इसकारण मेरे मन में किन्नर साहित्य पढ़ने की असीम इच्छा जागृत हो गई|इसी से प्रेरित होकर मैंने हिंदी की प्रतिष्ठित साहित्यकारा चित्रा मुदगल जी का लोकप्रिय उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 -नालासोपारा' पढ़ा| जिसमें उन्होंने एक विनोद नमक किन्नर

पात्र की जन्म से लेकर अंत तक के संघर्ष की गाथा का बड़ी मार्मिक ढंग से प्रस्तुत की है ।

बहुमुखी प्रतिभा की धनी हिंदी की प्रसिद्ध साहित्यकारा चित्रा मुदगल जी ने जननांग दोष के कारण समाज में तिरस्कार के पात्र बने रहे किन्नर समुदाय पर अपने ग्रंथ में सार गर्भित अभिव्यक्ति की जिससे मैं अत्यंत प्रेरित हुई। इससे मेरे मन में इस विषय को लेकर रूचि अधिक बढ़ती चली गई और मैंने नीरज माधव कृत 'यमदीप', तथा प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली' महेंद्र भीष्म कृत 'किन्नर कथा' तथा 'मैं पायल' आदि किन्नर की जीवनी पर आधारित अनेक उपन्यासों का अध्ययन किया।

किन्नर विमर्श पर आधारित यह सभी उपन्यास पढ़कर सही मायने में किन्नरों के दुख और पीड़ा से मेरे मन को झकझोर दिया। मेरे मन में किन्नर समाज के प्रति आस्था और बढ़ी। तथा इस विषय पर गहन अध्ययन करने एवं लेखन करने हेतु मुझे प्रेरणा मिली । इसी प्रेरणा से मैंने अपने शोध कार्य हेतु इस विषय का चयन किया । यह विषय स्वाभाविक ही उन उपेक्षित तथा बहिष्कृत वर्गों को न्याय दिलाने के लिए शोध कार्य में कारगर होगा। मैंने निश्चय किया कि मैं इस महत्वपूर्ण विषय पर अपने शोध कार्य हेतु लेखनी चलाऊंगी । इस संदर्भ में मैंने अपने मार्गदर्शन गुरुवर्य डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी महोदय जी से बातचीत भी की। उनके द्वारा किन्नर विमर्श पर अमूल्य मार्गदर्शन पाकर मैं धन्य हो गई। इस विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति भी उनके द्वारा प्रदान की गई।

#। प्रस्तुत अनुसंधान के इस विषय के शोध प्रबंध का सार संक्षेप में निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है ।

<u>शोध प्रबंध के उद्देश्य :-</u>

किसी भी कार्य को करने से पहले उसके उद्देश तय करना आवश्यक होता है क्योंकी कोई भी कार्य बिना उद्देश के निरर्थक होता है। प्रस्तुत शोधप्रबंध के कुछ प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार में दिए गये हैं।

१ किन्नरो की जीवन शैली को समझना ।

२. कीनन के जीवन और सामाजिक संबंधों का अध्ययन करना।

३. समाज की सामान्य जनमानस की थर्ड जेंडर के प्रति की दुषित दृष्टि में परिवर्तन लाना।

४ किन्नर को समाज में उचित स्थान दिलाने हेतु कदम बढ़ाना ।

५. किन्नर समुदाय के आंतरिक दुख होता था यातनाओं और पीड़ाओं से समाज को परिचित करवाना ।

६. किन्नर जीवन पर आधारित उपन्यासों की समीक्षा कर शिल्पगत विशेषता बताना ।

७ अपने परिवार से विस्थापित हुए तृतीय पंक्तियां के प्रति समाज के लोगों में सहानुभूति की भावना को जगाना ।

सारांश रूप में मैं कहूंगी कि यह प्रस्तुत शोध निबंध समाज के उन बहिष्कृत तृतीय पंथी वर्ग को न्याय दिलाने में कारगर सिद्ध होगा।

प्रस्तुत निबंध में समाज के किन्नर जिनको थर्ड जेंडर कहा जाता है उसे समुदाय के जीवन संबंधी लिखित उपन्यासों का मूल्यांकन किया है इस शोध कार्य में चित्रा मुदगल जी द्वारा लिखित 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा' ,नीरजा माधव कृत 'यमदीप', महेंद्र भीष्म कृत 'मैं पायल' तथा 'किन्नर कथा', निर्मल बुराडिया द्वारा लिखित 'गुलाम मंडी' तथा प्रदीप सौरभ द्वारा लिखित 'तीसरी ताली' ,सुभाष अखिल द्वारा लिखित 'दरमियांना', लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी द्वारा लिखित 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी', अनसूया त्यागी द्वारा लिखित 'मैं भी औरत हूं', भगवत अनमोल द्वारा लिखित 'जिंदगी 50-50', डॉ. लता अग्रवाल के द्वारा लिखित 'मंगलामुखी'
21वीं सदी के इन किन्नर विमर्श पर लिखित दस उपन्यासों का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

मेरे शोध /अनुसंधान कार्य की रूपरेखा निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत की गई है।

१ प्रथम अध्याय - किन्नर :अर्थ परिभाषा स्वरूप एवं प्रकार

२ द्वितीय अध्याय -किन्नर केंद्रीय 10 उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन

३ तृतीय अध्याय -किन्नर केंद्रित उपन्यासों में व्यक्त किन्नर का संघर्ष

४ चतुर्थ अध्याय - किन्नर केंद्रित उपन्यासों में चित्रित समस्याएं

५ पंचम अध्याय - किन्नर केंद्रित उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन

६ षष्ठम अध्याय - उपसंहार/निष्कर्ष

७ सप्तम अध्याय - संदर्भ ग्रंथ सूची

उपर्युक्त बिंदुओं को निम्नलिखित तौर पर विश्लेषित किया गया है।

अध्याय विवरण

प्रथम अध्याय#

__#_**किन्नर अर्थ परिभाषा स्वरूप एवं प्रकार#**

__प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में किन्नर शब्द जो हिजड़ा या ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो सूचित करता है कि इस समुदाय में महिला एवं पुरुष पूर्ण होते हैं। यहां किन्नर शब्द का अर्थ बताकर परिभाषा स्वरूप एवं प्रकार का उल्लेख करते हुए निम्न बिंदुओं को इस अध्याय में प्रस्तुत किया है।

१ किन्नर शब्द की उत्पत्ति

२ किन्नर शब्द का अर्थ व स्वरूप

३ किन्नर वर्ग के प्रकार

४ किन्नरो के रीति रिवाज तथा परंपरा

५ किन्नरो की गुरु परंपरा

६ किन्नरों के विभिन्न नाम

उत्पत्ति की दृष्टि से किन्नर दो शब्दों से योग से बना है किम पर्सनल अर्थात किन्नर जिसका अर्थ होता है हिजड़ा नपुंसक और किन्नर। किन्नर यह शब्द दो शब्दों के मेल से बना है जिसका तात्पर्य हिमालय की किन्नर जनजाति से नहीं बल्कि उसे वर्ग से है जो पूर्ण रूप से ना हिस्ट्री है और ना ही पुरुष। वस्तुत समाज में जिसे तृतीय वर्ग तृतीय पंथी के रूप में पहचाना जाता है। जिनकी जिनकी जीवन जीने की पद्धति तथा उनके रीति रिवाज परंपराएं यह सब समाज से अलग होते हैं।

किन्नर को अलग-अलग वर्गों में भी विभाजित किया जाता है । तथा इनका अलग-अलग नाम से भी संबोधित किया जाता है । जैसे -हिजड़ा, किन्नर, नपुंसक , तथा तृतीय पंथी, थर्ड जेंडर आदि । इस प्रकार से उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर इस विषय का विश्लेषण किया है।

दूसरा *अध्याय*

किन्नर केंद्रित 10 उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तुत शोध प्रबंध के द्वितीय अध्याय के अंतर्गत 21वीं सदी के हिंदी साहित्य के किन्नर केंद्रित प्रमुख 10 उपन्यासों का अध्ययन उपन्यासिक तत्वों के आधार पर किया गया है। निम्नलिखित किन्नर केंद्रित प्रमुख

उपन्यासों की समीक्षा की गई है। चित्रा मुद्गल कृत 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203-नालासोपारा', नीरजा माधव कृत 'यमदीप', निर्मला भुराडिया कृत 'गुलाम मंडी', महेंद्र ग्रीष्म भीष्म कृत 'मैं पायल', तथा 'किन्नर कथा', भगवत अनमोल द्वारा लिखित 'जिंदगी 50-50' ,लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी के द्वारा लिखित 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी', सुभाष अखिल 'दरमियांना', डॉ.लता अग्रवाल द्वारा लिखित 'मंगलामुखी' और अनसूया त्यागी के द्वारा लिखित 'मैंभी औरत हूं' ।

उपर्युक्त हिंदी के किन्नर केंद्रित उपन्यासों को उपन्यास के तत्वों की कसौटी के आधार पर विस्तृत रूप में जांचने का प्रयास इस प्रस्तुत अध्याय में किया गया है ।वह उपन्यास के तत्व निम्न प्रकार से है।

१ उपन्यास की कथावस्तु

२ उपन्यास का चरित्र चित्रण

३ उपन्यास की मूल संवेदना

४ देशकाल वातावरण

प्रस्तुत अध्याय में एक-एक करके सभी उपन्यासों को उपन्यास के तत्वों में रखकर उसकी समीक्षा करने का प्रयास मार्मिक ढंग से किया हुआ है।

<u>तृतीय अध्याय</u>

 # किन्नर केंद्रित उपन्यासों में व्यक्त किन्नरों का संघर्ष #

सूत्र बंद की स्थिति अध्याय के अंतर्गत कीनन अर्थात में तृतीय पंक्तियों के जीवन का अलग-अलग प्रकार का संघर्ष बिंदुओं के सहारे प्रस्तुत किया है वह बिंदु निम्नलिखित है

१ सामाजिक संघर्ष

२ आर्थिक संघर्ष

३ पारिवारिक संघर्ष

४ राजकीय संघर्ष

५ व्यक्तिगत संघर्ष

समाज में रहकर कीनन को समाज की प्रताड़ना सहनी पड़ती है तथा उनकी आजीविका का साधन न होने के कारण उन्हें जिस प्रकार आर्थिक विक्रेता से जूझना पड़ता है तथा शारीरिक भिन्नता के कारण व्यक्तिगत संघर्ष का सामना करना पड़ता है इसका विस्तृत चित्रण इस अध्याय में दिया है l तथा हमेशा से ही हास्य पर रख किन्नर समुदाय को समझ में रहकर इस समाज से तथा अपने परिवार से भी किसी प्रकार प्रताड़ना सहन करनी पड़ती है तथा संघर्ष का सामना करना पड़ता है इसका भी विवरण इसके अंतर्गत दिया हुआ है।

<u>चतुर्थ अध्याय</u>

 # किन्नर केंद्रित उपन्यासों में चित्रित समस्याएं #

शोध कार्य अनुसंधान में इस चतुर्थ अध्याय में किन्नर केंद्रित उपन्यासों में आने वाली अनेक समस्याओं को निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा उद्घाटित करने का प्रयास किया है।

१ समाज में असमानता

२ घर की समस्या

३ रोजगार की समस्या

४ स्वाभिमान की समस्या

५ संतान न होने की पीड़ा

६ व्यक्तिगत विकार

७ परिवार से बिछड़ने का दुख

८ सामाजिक स्थिति एवं सम्मान

९ शिक्षा एवं जागरूकता की कमी

उपर्युक्त बिंदुओं के सहारे किन्नर केंद्रित उपन्यासों में चित्रित की गई समस्याओं को यहां बड़ी मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास चतुर्थ अध्याय में किया गया है, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करता है।

पंचम अध्याय

 # किन्नर केंद्रित उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन #

उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन उपन्यासों के रचनात्मक तथा शिल्पगत तत्वों के आधार पर होता है निम्नलिखित तत्वों के आधार पर ही उपन्यास की

गहराइयों में जाकर समझने में मदद होती हैं। किन्नर संबंधी उपन्यासों का शिल्प के आधार पर अध्ययन करते समय निम्नलिखित बिंदुओं के सहारे प्रस्तुत किया जाता है।

1 पात्र : पात्रों की व्यक्तिगतता, स्थितियाँ और दिलचस्प व्यक्तिगत यात्राएँ उपन्यास के महत्वपूर्ण हिस्से होती हैं। पात्रों के बीच संबंध के बारे में अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।

2. संरचना : उपन्यास की संरचना, यानी कहानी के विभिन्न हिस्सों की व्यवस्था, कथा की प्रगति और समापन के प्रत्येक घटक की महत्वपूर्णता पर चर्चा करती है।

3. भाषा और शैली : लेखक की भाषा, शैली, और भाषा के विशेष उपयोग का अध्ययन करके उपन्यास के शिल्पी आयाम को समझना महत्वपूर्ण है।

4. समय और स्थान: उपन्यास में समय और स्थान का महत्वपूर्ण भूमिका होता है, जिसका अध्ययन पटकथा के विकास को समझने में मदद करता है।

5 परिप्रेक्ष्य : उपन्यास में समाज, सांस्कृतिक विविधता, और सामाजिक मुद्दे के परिप्रेक्ष्य का अध्ययन करके उपन्यास के मूल संदेश को समझने में मदद मिलती है।

6. विषय और उद्देश्य : उपन्यास के पीछे छिपे विषय और उद्देश्य की खोज करना महत्वपूर्ण है, जो उपन्यास के लेखक की दृष्टि, मनोबल, और साहित्यिक उद्देश्य को प्रकट करते हैं। उपर्युक्त इन सभी बिंदुओं के आधार पर ही प्रस्तुत अध्याय में शिल्पगत अध्ययन देखा जा सकता है।

षष्ठम अध्याय

 # उपसंहार / निष्कर्ष #

शोध प्रबंध का षष्ठम अध्याय उपसंहार है। इस अध्याय में शोध प्रबंध की उपलब्धियां को पूरी तरह से समेटा गया है तथा इस अध्याय में उपर्युक्त आलोच्य शोध प्रबंध के पांचो अध्यायों का मूल्यांकन तथा निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष तौर पर हम निम्नलिखित बिंदुओं को देख सकते हैं।

१ निष्कर्ष तौर पर यह पता चलता है कि कीनन के गौरवशाली इतिहास के बावजूद भी इनकी भारतीय समाज में लगातार उपेक्षा होती रही है एवं किन्नर समुदाय समाज की धारा से बाहर रहा है।

२ उपर्युक्त सभी किन्नर विमर्श परंपरा के उपन्यास कीनन के जीवन की प्रताड़ित अपेक्षित तथा यातनाओं भारी जिंदगी को प्रस्तुत करते हैं।

३ उल्लेखित सभी उपन्यास समाज की कीनन के प्रति सोच बदलने का एक अच्छा प्रयास है।

४ लोगों का कीनन के प्रति जो व्यवहार है उनके प्रति जो सच है निश्चय ही इस उपन्यास को पढ़ने के पश्चात उन्हें परिवर्तन जरूर होगा |

<u>सप्तम अध्याय</u>

संदर्भ ग्रंथ सूची

१ चित्रा मुद्‌गल ,'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 - नालासोपारा', सामायिक प्रकाशन ,नई दिल्ली

२ प्रदीप सौरभ,'मुन्नी मोबाइल', वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली

३ नीरजा माधव ,'यमदीप', सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली

४ निर्मल बुराडिया ,'गुलाम मंडी', सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली

५ अनुसूया त्यागी, 'मैं भी औरत हूं', परमेश्वरी प्रकाशन, नई दिल्ली

६ डॉ. लता अग्रवाल ,'मंगलमुखी' विकास प्रकाशन, नई दिल्ली

७ महेंद्र भीष्म ,'किन्नर कथा',सामाजिक प्रकाशन ,नई दिल्ली

८ लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी,'मैं हिजड़े मैं लक्ष्मी' ,वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली
९ सुभाष अखिल,'दरमियांना', अमन प्रकाशन, कानपुर

१० मिलन बिश्नोई ,'किन्नर विमर्श :साहित्य और समाज' ,विद्या प्रकाशन
११ शरद सिंह,' थर्ड जेंडर विमर्श', सामाजिक पेपर बैक्स ,नई दिल्ली

शोध छात्रा
सुनीता कोंडीबा मडके

शोध निर्देशक
डॉ प्रदीप सूर्यवंशी सर
(हिंदी विभाग अध्यक्ष)
दयानंद कला महाविद्यालय, लातुर